International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

गोंड जनजाति मे नशे की प्रवृत्ति का अध्ययन: दमोह जिले के विशेष संदर्भ मे

डॉ. विनय कुमार वर्मा

सहायक प्राध्यापक भूगोल, शासकीय महाविद्यालय पथरिया, जिला दमोह (म.प्र.)

शोध सारांश:

गोंड जनजाति समूह भारत की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति है जो मुख्य रूप से मध्य भारत के दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों व वनों में निवास करती है तथा अपनी समृद्ध सांस्कृतिक लक्षणों के आधार पर विशिष्ट पहचान रखती हैं। भारत की कुल जनजातीय जनसंख्या में गोंड जनजाति की हिस्सेदारी 35.6 प्रतिशत है ।2011 की जनगणना के अनुसार भारत में गोंड जनजाति की जनसंख्या 4357918 है जबकि कुल गोंड जनसंख्या का 38.41 प्रतिशत मध्यप्रदेश में पाया जाता है। मध्यप्रदेश मे यह जनजाति मुख्य रूप नर्मदा नदी घाटी के दोनों ओर केन्द्रित है। गोंड जनजाति मे मादक द्रव्य व्यसनों का चलन तेजी से बढ़ रहा है। विशेषकर तम्बाकू उत्पादों को सेवन की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई है। वर्तमान शोध पत्र में दमोह जिले के गोंड जनजाति के मध्य नशा वृत्ति के प्रवृत्तियों का अध्ययन व विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन मुख्य रूप से प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित है जिसमें चयनित प्रतिदर्श उत्तरदाताओं के प्राप्त सूचनाओं के आधार पर परिणामों का विश्लेषण किया गया है।

कुंजी शब्द: जनजाति, नशा, तंबाकू, बीड़ी, अपराध

प्रस्तावना:

विगत दो दशकों मे भारत में नशावृत्ति की आदत में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है तथा आदिवासी समाज भी इस प्रवृत्ति से अछूता नही है। बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, भांग जैसे परम्परागत मादक पदार्थों के साथ शराब, गांजा, अफीम, चरस जैसे नशीले पदार्थों के सेवन का प्रचलन तेजी से बढ़ा है। तीव्र गति से बढ़ता औद्योगीकरण व नगरीकरण इस वृत्ति के विकास में सहायक सिद्ध हुये है। आधुनिकीकण भी एक महत्वपूर्ण कारण है। गोंड जनजाति में विशेष अवसरों पर नशा करने की विशेषकर शराब के प्रवृत्ति रही है परन्तु वर्तमान में शान शौकत व मनोरंजन की दृष्टि से नशा करते है, शारीरिक व मानसिक थकान दूर करने हेतु भी अनेक लोग मादक पदार्थों का उपयोग करते हैं। अनेक लोग अपने परम्परागत निवास स्थान को छोड़कर नगरों व महानगरों में बस गये हैं जहां ये पदार्थ सर्वम सुलभ है।उच्च आय वर्ग

परिवारों में दिखावे व आधुनिक दिखने की प्रवृत्ति ने नशे की लत को बढ़ावा दिया है। पुरुषों के साथ किशोर व महिलायें भी इस वृत्ति से ग्रसित हैं। संयुक्त परिवार के विघटन व समाज में एकांकी जीवन भी नशा वृत्ति का एक प्रमुख कारण है। तेजी से हो रहे आर्थिक व विकास ने नशे की तकनीकी को भी जन्म दिया है। मादक द्रव्य व्यसन के प्रयोग के सम्बन्ध में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विचार वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी अत्यंत प्रासंगिक है। वे सदैव इस वृत्ति के विरोधी थे उनका मत है कि शराब व्यक्ति के मन, बुद्धि, शरीर और धन को बर्बाद करता है।

गोंड मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजाति है तथा जनसंख्या के आधार पर यह मध्यप्रदेश की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति है। मध्यप्रदेश में गोंड जनजाति की जनसंख्या 50.93 लाख है जो कुल आदिवासी जनसंख्या का एक तिहाई है। मध्यप्रदेश मे गोंड जनजाति का प्रमुख निवास क्षेत्र दक्षिणी में नर्मदा के दोनों ओर व पूर्वी पहाड़ी क्षेत्र है तथापि वर्तमान में अधिकांश जिला में गोंड जनजाति की पर्याप्त जनसंख्या निवास करती है।

गोंड जनजाति के संबंध में प्रचलित धारणाओं के अनुसार गोंड शब्द की उत्पत्ति द्रविण शब्द कोंड से हुई है जिस का तात्पर्य है पर्वत। अतः पर्वतों व दुर्लभ क्षेत्रों में निवास करने वाले लोग गोंड कहलाये। गोंड जनजाति भारत की सर्वाधिक प्रभावशाली व सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध जनजाति है। मध्यकाल में मध्य भारत के बड़े भू-भाग पर गोंड साम्राज्य का विस्तार था जहां गोंड शासकों ने अनेक किले व महलों का निर्माण कराया। मध्यप्रदेश के महाकौशल, बुन्देलखण्ड व नर्मदा घाटी में इस जनजाति का विशेष प्रभाव रहा है। कालांतर में मुगलों व मराठों के प्रभाव से यह कई वर्गों में बट गये। उच्च वर्ग के राजगोडो, सामंत ने हिन्दू प्रभाव को स्वीकार किया तथा उन्होंने त्योहारों व उत्सवों को स्वीकार किया तथा हिन्दू देवी देवताओं को पूजने लगे।

गोंड जनजाति की बहुत बड़ी संख्या जंगलों तथा पर्वतीय क्षेत्रों में निवासरत है तथा मुख्य रूप से कृषक के रूप में जीविकोपार्जन कर रहे हैं। हिन्दु प्रभाव से गोंड मिट्टी के घर बनाने लगे हैं तथा घासपूस की छत होती है वनों के बाँस, घास, लकड़ी आदि की सहायता से झोपड़े बनाते हैं। मकान बहुत बड़ा नहीं होता। घरों में मिट्टी का लेप कर चित्रकारी की जाती है। कुछ वर्ष पूर्व गोंड स्त्री-पुरुष प्रायः धोती, साड़ी का प्रयोग करते थे परन्तु वर्तमान में अन्य समाज की भांति इनके वस्त्रों में परिवर्तन हुआ है तथा अब वे विभिन्न प्रकार के आधुनिक वस्त्रों का उपयोग करने लगे हैं। गोंड अनेक टोटम में विभाजित हैं तथा अनेक देवताओं की पूजा करते हैं। त्योहारों तथा उत्सवों के अवसर पर गायन वादन की परम्परा है जो सामूहिक रूप से होता है। इस जनजाति के लोग अनेक जातीय त्योहार मनाते हैं।

साहित्य का पुनरावलोकन:

कुमार व शर्मा द्वारा गोंड जनजाति की शारीरिक विशेषताओं का उल्लेख करते हुये उनकी सामाजिक आर्थिक दशा व सांस्कृतिक गतिवधियों का विस्तार से वर्णन किया है। डावर व रावत (2015) ने अपने अध्ययन में पश्चिमी मध्यप्रदेश की जनजातियों में नशीले पदार्थों के सेवन संबंधी प्रवृत्ति का अध्ययन कर कारण व परिणामों की चर्चा की है। यादव (2019) ने अपने शोध अध्ययन में गोंड़ जनजाति की सांस्कृतिक गतिविधियों व उत्सवों की विषद व्याख्या की है। वरकड़े (2022) ने मण्डला जिले के विशेष संदर्भ में गोंड जनजाति के तीज त्यौहारों का अध्ययन किया है।

विधि तंत्र :

वर्तमान अध्ययन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीय समंकों का प्रयोग किया गया है। दमोह जिले की भौगोलिक सूचनायें एवं सामान्य जानकारी का संकलन जिला गजेटियर दमोह, पत्रिकाओं तथा सम्बन्धित उपलब्ध साहित्य से किया गया है। जनसंख्या संबंधी आंकड़ों का संग्रहण जिला जनगणना पुस्तिका दमोह एवं इंटरनेट माध्यम से किया गया है।

प्राथमिक आंकड़ों का संकलन साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन प्रणाली का प्रयोग करते हुए चयनित प्रतिदर्श उत्तरदाताओं से किया गया है। सूचना संग्रहण हेतु गोंड बाहुल्य विकासखण्ड जबेरा व तेंदुखेड़ा अंतर्गत चयनित ग्रामों के परिवारों एवं उत्तरदाताओं का चयन कर सूचना प्राप्त की गई। संकलित सूचनाओं एवं आंकड़ों को विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों विशेषकर सारणीयन, प्रतिशत एवं औसत के माध्यम से निष्कर्ष प्राप्त किये गये जिन्हें विभिन्न मानचित्र तकनीकि के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य:

1. गोंड जनजाति में नशावृत्ति का अध्ययन।
2. नशावृत्ति के कारणों का विश्लेषण।
3. नशावृत्ति के प्रभाव व परिणाम का अध्ययन।

अध्ययन क्षेत्र:

दमोह जिला मध्य प्रदेश के उत्तर पूर्व में स्थित है। यह 23º91' से 24º27' उत्तरी अक्षांश और 79º31' से 79º51' पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। दमोह जिला सागर संभाग का एक हिस्सा है। यह जिला उत्तर और उत्तर पश्चिम में छतरपुर जिले, पश्चिम में सागर, दक्षिण में नरसिंहपुर और जबलपुर तथा पूर्व में पन्ना जिले से घिरा हुआ है। जिले का आकार अनियमित है तथा उत्तर से दक्षिण की ओर फैला हुआ है, तथा पूर्व और पश्चिम में फैला हुआ है। जिले को 7 तहसीलों और सात विकास खंडों में विभाजित किया गया है, जिसमें लगभग 1229 गांव और 6 कस्बे हैं।

जिले को तीन भौगोलिक प्रभागों में विभाजित किया जा सकता है:

1. दक्षिणी पठार
2. सोनार घाटी
3. उत्तर पश्चिमी पहाड़ी श्रृंखला

जिले में विंध्य पर्वतमाला के दक्षिणी भाग से लेकर कटंगिया तक को भांडेर पर्वतमाला कहा जाता है। इस पर्वतमाला का सबसे ऊँचा बिंदु सिंगरामपुर के उत्तर पश्चिम में कलुमार पहाड़ी (751 मीटर) है। अन्य जगहों पर पहाड़ियाँ 550 से 580 मीटर ऊँची हैं। दक्षिणी पठार बेयरमा द्वारा अपवाहित है और विंध्य पर्वतमाला की कई चोटियों और कटकों द्वारा अनुप्रस्थ है।

सोनार घाटी जिले के उत्तर मध्य भाग में एक पट्टी रूप मे विस्तृत है। यह लगभग 80 किमी लंबी, 32 से 43 किमी चौड़ी है, यह घाटी जिले के मध्य भाग में स्थित है और उपजाऊ मिट्टी से बनी है। उत्तर पश्चिमी पहाड़ियाँ लगभग 120 मीटर ऊँची हैं जिन्हें स्थानीय रूप से बारानो पहाड़ी के रूप में जाना जाता है, केंद्रीय रिज (460 से 520 मीटर) कई सपाट शीर्ष वाली पहाड़ियों द्वारा चिह्नित है। दमोह जिले की जलवायु गर्म, ग्रीष्मकाल और मानसून को छोड़कर सामान्य शुष्कता की विशेषता है। वर्ष को तीन ऋतुओं में विभाजित किया जा सकता है। ग्रीष्म ऋतु मध्य मार्च से मध्य जून तक, वर्षा ऋतु मध्य जुलाई से मध्य सितंबर तक और शीत ऋतु मध्य नवंबर से मध्य फरवरी तक। जिले की औसत वार्षिक वर्षा 117 सेमी है और मानसून के मौसम के दौरान प्राप्त कुल वर्षा का लगभग 90.5% है। मई सबसे गर्म महीना है और इस महीने के दौरान प्राप्त सामान्य अधिकतम तापमान 42ºC और दिसंबर-जनवरी के दौरान न्यूनतम 9.7ºC है। जिले में मिट्टी मुख्य रूप से तीन प्रकार की है- मध्यम ब्लॉक मिट्टी। उथली काली मिट्टी और कंकाल मिट्टी। काली मिट्टी ज्यादातर सोनार घाटी और बेरमा के किनारे पाई जाती है जिले के वन उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती हैं जिनमें शुष्क पर्णपाती झाड़ीदार वन हैं। इस क्षेत्र में पाए जाने वाले वृक्षों की प्रजातियों में सागौन, धौरा, सलाई, साज, महुआ, सेमल, हल्दू, तेंदू और अचार आदि शामिल हैं।

दमोह जिले में जनजातीय जनसंख्या का वितरण प्रतिरूप

2011 की जनगणना अनुसार दमोह जिले में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 166295 है जो कुल जनसंख्या का 13.15 प्रतिशत है।

तहसीलवार जनजातीय जनसंख्या के वितरण प्रतिरूप से स्पष्ट है कि सर्वाधिक जनसंख्या तेंदूखेड़ा तहसील में निवासरत है जहां की कुल जनसंख्या में 29.24 प्रतिशत आबादी जनजातीय है, जबेरा तहसील की 23.96 प्रतिशत जनसंख्या अनुसूचित जनजाति है जबकि सबसे कम जनजातीय जनसंख्या पथरिया तहसील में पायी जाती है जहां केवल 4.25 प्रतिशत जनसंख्या जनजातीय है। अन्य तहसीलों में जनजातीय जनसंख्या का प्रतिशत बटियागढ़ 12.34 प्रतिशत, पटेरा 11.33 प्रतिशत, हटा 10.55 प्रतिशत तथा दमोह 7.69 प्रतिशत है।

तालिका 1: तहसीलवार जनजातीय जनसंख्या

तहसील	जनसंख्या	कुल जनसंख्या में जनजातीय जनसंख्या का प्रतिशत
हटा	15786	10.55
पटेरा	14087	11.33
बटियागढ़	17455	12.34
पथरिया	7327	4.25
दमोह	27654	7.69

जबेरा	39250	23.96
तेंदूखेड़ा	44736	29.24
कुल	166295	13.15

स्रोतः जिला जनगणना पुस्तिका, दमोह, 2011

जिले की कुल जनजाति जनसंख्या में से गोंड जनजाति की जनसंख्या 142079 है जो कुल जनजाति जनसंख्या का 85.43 प्रतिशत है। इस प्रकार दमोह जिला गोंड जनजाति बाहुल्य जिला है जिसमें गोंड व उसकी अनेक उपसमूह जातियाँ अरख, अगरिया, धुरवा, धोबी, धूलिया, गोंड, गोवरी एवं खिम्वार प्रमुख है। दमोह जिले की तहसीलों में गोंड जनजाति का संकेन्द्रण मुख्य रूप से तेंदुखेड़ा व जबेरा तहसील में पाया जाता है जहां एक चौथाई से अधिक जनजातीय जनसंख्या पायी जाती है।

तालिका 2: गोंड जनजाति की जनसंख्या, 2011

जनसंख्या	कुल	पुरुष	महिला
नगरीय	4579	2352	2227
ग्रामीण	137500	70019	67481
कुल	142079	72371	69708

स्रोतः जिला जनगणना पुस्तिका, दमोह, 2011

कुल गोंड जनसंख्या में से 96.77 प्रतिशत गोंड ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते है जबकि केवल 3.23 प्रतिशत गोंड जनसंख्या नगरीय क्षेत्रों में निवास करती है।

परिणाम व विश्लेषण

(1) नशा सेवन संबंधी आदतः

वर्तमान अध्ययन हेतु दमोह जिले के जबेरा व तेंदूखेड़ा तहसील के अंतर्गत चयनित ग्रामों में किया गया है। यह पाया गया कि 72 प्रतिशत पुरुष किसी न किसी प्रकार का नशा करते हैं जबकि 28 प्रतिशत महिलायें नशा करती हैं। दी गई तालिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि गोंड जनजाति में नशे की आदत मित्रगण व सहयोगियों से प्राप्त होती है। 52.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कथन है कि उन्हें नशे की आदत मित्रों व साथ काम करने वाले सहयोगी एवं सहकर्मियों से हुई। 31.95 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार नशीले पदार्थों के सेवन की आदत परिवार के बुजुर्गों से तथा 15.55 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार नशे की लत रिश्तेदारों से प्राप्त हुई।

तालिका 3: नशे सेवन की आदत का स्रोत

नशा सेवन की आदत का स्रोत	संख्या	प्रतिशत
मित्र एवं सहकर्मी	54	52.94
परिवार	33	32.35
रिश्तेदार व अन्य	15	14.70

स्रोत: साक्षात्कार अनुसूची पर आधारित।

2. नशे का प्रकार

यह पाया गया कि पुरुष एक से अधिक तथा विभिन्न प्रकार का नशा करते हैं जिसमें तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, गुटखा, शराब, चिलम, गांजा व शराब उल्लेखनीय है। जबकि महिलायें ज्यादातर धुंआरहित नशा जैसे तम्बाकू, गुटखा एवं शराब का सेवन करती हैं।

तालिका 4: नशे का प्रकार

नशे का प्रकार	पुरुष	महिला
तम्बाकू/चिलम	56	9.8
बीड़ी	62	00
सिगरेट	5	00
पानमसाला/गुटखा	42	17
शराब	51	3.3
अन्य	2	00

स्रोत: साक्षात्कार अनुसूची पर आधारित।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 61 प्रतिशत पुरुष उत्तरदाता तम्बाकू का सेवन करते है जबकि केवल 9.8 प्रतिशत महिलायें तम्बाकू का उपयोग करती हैं। लगभग 69 प्रतिशत उत्तरदाता बीड़ी का नशा करते है एवं केवल 5.1 प्रतिशत लोग नशे के रूप में सिगरेट का प्रयोग करते हैं। स्पष्टतः गोंड जनजाति में बीड़ी की तुलना में सिगरेट का प्रचलन नहीं है। महिलाओं में बीड़ी व सिगरेट से धूम्रपान की प्रवृत्ति नहीं पाई गई। यह पाया गया कि लगभग 42 प्रतिशत पुरुष पान मसाला व गुटखा का प्रयोग नशे के रूप में करते हैं जबकि लगभग 17 प्रतिशत महिलाऐं नशे के रूप में पानमसाला व गुटखा का सेवन करती हैं। यह पाया गया कि 51 प्रतिशत पुरुष तथा 3.3 प्रतिशत महिलायें शराब का सेवन करती है। शराब का सेवन आमतौर पर विवाह समारोह या अन्य उत्सवों पर अधिक होता है। 2 प्रतिशत पुरुष उत्तरदाता नशे के रूप में नश मंजन का प्रयोग करते हैं।महिलाओं में गुटखा, पान तथा शराब के सेवन की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई है।

(3) आयुवर्ग अनुसार नशे की प्रवृत्ति:

आयु वर्ग के अनुसर नशे की प्रवृत्ति में अंतर पाया जाता है।पुरुष समुदाय में कम आयु के युवक एवं किशोर में नशा करना प्रारम्भ हो जाता है जबकी महिलाओ में अधिक उम्र में नशा की प्रवृत्ति देखने को मिलती है यह पाया गया कि जिन परिवारों में बड़े-बुजुर्गों में नशे की प्रवृत्ति है वहां 10 वर्ष से कम आयु के बच्चे भी नशा करना प्रारंभ कर देते हैं। लगभग 4.95 प्रतिशत नशे की प्रवृत्ति 0-10 आयु वर्ग में पायी गई, 41 प्रतिशत 10-20 वर्ष तथा 54.05 प्रतिशत उत्तरदाता में नशे की प्रवृत्ति 20 वर्ष के पश्चात ग्रहण किया।

(4) नशे का कारण व प्रभाव:

अधिकांश उत्तरदाता आनंद प्राप्ति के लिये नशा का सहारा लेते हैं। गोंड जनजाति के सामाजिक सांस्कृतिक गतिविधियों के दौरान भी नशे का सेवन किया जाता है। बीमारियों से राहत ,दांत दर्द अथवा थकान आदि उतारने के लिए भी गोंड जनजाति के लोग नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं। अध्ययन के दौरान पाया गया की लगभग 51 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि नशीले पदार्थ के सेवन से वाद-विवाद की स्थिति निर्मित होती है। 26 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि नशे से स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ा है। 16 प्रतिशत उत्तरदाता मारपीट होना नशे का प्रभाव होना मानते हैं। 7 प्रतिशत उत्तरदाता द्वारा अन्य प्रभावों जैसे आर्थिक व्यय, सामाजिक स्थिति को स्वीकार किया गया है। पुरुष एवं महिला डोनो ही वर्ग के उत्तरदाताओं का कहना है कि नशे की आदत के करण विभिन्न प्रकार के अपराधो में वृद्धि हुई है।

निष्कर्ष:

गोंड मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजाति है तथा जनसंख्या के आधार पर यह मध्यप्रदेश की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति है। मध्यप्रदेश में गोंड जनजाति की जनसंख्या 50.93 लाख है जो कुल आदिवासी जनसंख्या का एक तिहाई है ।2011 की जनगणना अनुसार दमोह जिले में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 166295 है जो कुल जनसंख्या का 13.15 प्रतिशत है। सर्वाधिक जनसंख्या तेंदूखेड़ा तहसील में निवासरत है जहां की कुल जनसंख्या में 29.24 प्रतिशत आबादी जनजातीय है, जबेरा तहसील की 23.96 प्रतिशत जनसंख्या अनुसूचित जनजाति है ।विगत दो दशकों में भारत में नशावृत्ति की आदत में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है तथा आदिवासी समाज भी इस प्रवृत्ति से अछूता नहीं है। बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, भांग जैसे परम्परागत मादक पदार्थों के साथ शराब, गांजा, अफीम, चरस जैसे नशीले पदार्थों के सेवन का प्रचलन तेजी से बढ़ा है। पुरुषों के साथ किशोर व महिलायें भी इस वृत्ति से ग्रसित हैं। यह पाया गया कि 72 प्रतिशत पुरुष किसी न किसी प्रकार का नशा करते हैं जबकि 28 प्रतिशत महिलायें नशा करती हैं।61 प्रतिशत पुरुष उत्तरदाता तम्बाकू का सेवन करते है जबकि केवल 9.8 प्रतिशत महिलायें तम्बाकू का उपयोग करती हैं। लगभग 69 प्रतिशत उत्तरदाता बीड़ी का नशा करते है एवं केवल 5.1 प्रतिशत लोग नशे के रूप में सिगरेट का प्रयोग करते हैं।गोंद जनजाति

में नशावृत्ति के अनेक कारण हैं जिनमें त्यौहार, उत्सव एवं विवाह आदि के अवसर पर, बीमारियो से राहत, थकन दूर करने हेतु हेतु तथा मनोरंजन एवं आनंद प्रमुख है ।

संदर्भ सूची:

1. 1. झा, आर.सी. , मादक प्रयोग के दुष्परिणाम पर महात्मा गांधी के विचार, रिसर्च ज्ञान, वाल्यूम 12, इश्यू 4,2019, 1156-1160
2. कुमार, एस. एवं चलिया, पी. , किशोरावस्था में नशे की लत से ग्रसित होने के कारणों का अध्ययन, जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड साइकोलॉजी रिसर्च, वाल्यूम 3, नं.1, 2013,1-6
3. शर्मा, श्रीकमल , मध्यप्रदेश का भूगोल, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल,2014
4. शर्मा, श्रीनाथ , जनजातीय समाज का समाजशास्त्र, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल,2015
5. वरकड़े, एस.एस. , गोंड जनजाति के तीज त्योहार मण्डला जिले के विशेष संदर्भ में, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करेंट साइंस, वाल्यूम 12, इश्यू 4,2022, 708-715
6. यादव, नीतू , मध्यप्रदेश की गोंड जनजाति की ऐतिहासिकता एवं संस्कृति का अध्ययन, श्रंखला एक शोध परक वैचारिक पत्रिका, वाल्यूम 6, इश्यू 8, पार्ट-2,2019 ,116-119